

No. of Printed Pages : 4

**BSOC-133**

**BACHELOR OF ARTS (GENERAL)**

**SOCIOLOGY (BAG)**

**Term-End Examination**

**December, 2022**

**BSOC-133 : SOCIOLOGICAL THEORIES**

*Time : 3 Hours*

*Maximum Marks : 100*

---

**Note :** *Attempt any **five** questions in about **400** words each. All questions carry equal marks.*

---

---

1. Explain the influence of German philosophy and idealism on Marx's ideas. 20
  
2. Discuss the central idea in Durkheim's study of suicide. 20
  
3. What are the ideal types ? Outline their main characteristics. 20
  
4. Compare Marx's and Durkheim's views on division of labour. 20

**P. T. O.**

5. What is social fact ? Explain the rules for distinguishing between normal and pathological social facts. 20
6. Explain the social impact of the doctrine of predestination. 20
7. Critically examine the future of rationalized western world with reference to the viewpoint of Weber. 20
8. Write short notes on the following : 5×4=20
  - (i) Verstehan
  - (ii) Alienation
  - (iii) Primitive-communal form of society
  - (iv) Collective conscience

**BSOC-133**

बी. ए. ( सामान्य )  
 समाजशास्त्र ( बी. ए. जी. )  
 सत्रांत परीक्षा  
 दिसम्बर, 2022

बी. एस. ओ. सी.-133 : समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 100

**नोट :** किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. मार्क्स के विचार पर जर्मन दर्शन और आदर्शवाद के प्रभाव की व्याख्या कीजिए। 20
2. आत्महत्या के अध्ययन में दुर्खीम के प्रमुख विचार की विवेचना कीजिए। 20
3. आदर्श प्ररूप क्या हैं ? उनकी मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। 20

4. श्रम-विभाजन पर मार्क्स और दुर्खीम के विचारों की तुलना कीजिए। 20
5. सामाजिक तथ्य क्या है ? सामान्य और व्याधिकीय सामाजिक तथ्यों के बीच अन्तर करने के नियमों की व्याख्या कीजिए। 20
6. पूर्वनियति के सिद्धान्त के सामाजिक प्रभाव की व्याख्या कीजिए। 20
7. वेबर के दृष्टिकोण के सन्दर्भ में तर्कसंगत पश्चिमी दुनिया के भविष्य की आलोचनात्मक जाँच कीजिए। 20
8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :  $5 \times 4 = 20$
- (i) वरस्टेहन
  - (ii) विलगीकरण
  - (iii) समाज का आदिम-सामुदायिक प्रारूप
  - (iv) सामूहिक विवेक